Since March 2002
An International, Registered & Referred Monthly Journal : Drawing
Research Link - 159, Vol - XVI (4), June - 2017, Page No. 112-113
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

भारतीय चित्रकला में सौन्दर्य की बदलती तस्वीर एवं महत्व : एक अध्ययन

प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीय चित्रकला में वर्तमान समय में प्राकृतिक सौन्दर्य के बदलते स्वरुप का अध्ययन किया गया है। मानवीय संस्कृति, जिसकी छवि बनाने में सदियां बीत जाती हैं, उसका रुप मानव आधुनिक यंत्रों, औजारों और अपने कामों से कुछ ही समय में बदल रहा है। जिसका प्रभाव प्राकृतिक सौन्दर्य पर ही नहीं, मानव जीवन पर भी हो रहा है। प्राचीन वास्तुकला और चित्रकला में वृक्ष प्रेम के अनेक उदाहरण मिलते हैं। प्रकृति अपने सौन्दर्य वातावरण में क्रियाकलापों के माध्यम से प्राकृतिक सौन्दर्य को स्वच्छ रखने का प्रयास करती है, परंतु मानव विकास की दौड़ में पर्यावरण एवं प्राकृतिक सौन्दर्य की बदलती तस्वीर की अनदेखी कर रहा है।

डॉ.कृष्णचन्द्र नेगी* एवं डॉ.सोना पेन्यूली उनियाल**

प्रस्तुत शोध पत्र में में प्राकृतिक सौन्दर्य की बदलती तस्वीर का अध्ययन किया गया है। सौन्दर्य संवेदात्मक भावात्मक गुण धर्म और मूल्यों का अध्ययन है। कला संस्कृति और कला के प्रति अंकन ही सौन्दर्य है। प्राकृतिक दृश्य, प्राकृतिक स्वरुप, लहलहाते झरने, नदियाँ, झीलें, हरे भरे वन हिम से अच्छादित हिमालय दृश्य व्यापक एवं वरदान साबित होता है। मानवीय संस्कृति जिसकी छवि बनाने में सदियां बीत जाती है, उसका रुप मानव आधुनिक समय में चन्द मिनटों में बदल रहा है, जिसका कुप्रभाव मानव जीवन पर पड़ रहा है। पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण से वन सम्पदा का होना आवश्यक है। परन्तु विगत कई वर्षों से शहरीकरण व विकास के नाम पर वृक्षों की अधांधुध कटाई की जा रही है, जो कि गम्भीर चिन्ता का विषय है।[1] वृक्षों की कटाई से प्राकृतिक सौन्दर्य पर प्रभाव पड़ रहा और अपना रुप बदलता जा रहा है। प्रकृति का अधांधुध दोहन, अवैध खनन एवं विनाशकारी पदार्थों के लिए किया जा रहा है, जिसका प्रभाव प्राकृतिक सौन्दर्य पर ही नहीं मानव जीवन पर पड़ रहा है। इस प्रकार पर्यावरण प्रदूषण, वायु जल एवं स्थल की भौतिक रासायनिक एवं जैविक विशेषताओं में होने वाला वह अवांछनीय परिवर्तन है, जो मानव एवं उसके लिए लाभकारी तथा अन्य जन्तुओं और पेड़–पौधों, औद्योगिक तथा कच्चे माल इत्यादि को हानि पहुँचाता है।[2] मानव और प्रकृति के बीच का संतुलन बिगड़ना प्रकृति से छेड़छाड़ करना। अपनी सुख सुविधाओं के लिए मानव प्रकृति का दोहन कर रहा है। वर्तमान समय की हम बात करें, तो कुछ वर्षों से लगातार ग्रामीण पहाड़ी क्षेत्रों में सड़कों का निर्माण उच्च स्तर पर चल रहा है, उस निर्माण कार्य में हजारों पेड़ों की कटाई की जा रही है। इस प्रकार वृक्षों की कटाई और धरती पर विभिन्न मशीनों की सहायता से जो निर्माण कार्य चल रहा है, तो क्या प्रकृति अपने विनाश के लिए चुप रहेगी। बादल फटना, बाढ़ आना प्राकृतिक आपदाओं का आना ये ही कारण बन जाते हैं, प्रकृति की छेड़छाड़ करने से। पर्यावरण के बिगड़ते हुए रुप को सारा जगत ही चिन्तित है, लेकिन मानव पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी को नहीं समझ पा रहा है कि इसके दुष्परिणाम हमको झेलना होंगे। प्रकृति अपने सौन्दर्यपूर्ण वातावरण में क्रियाकलापों के माध्यम से प्राकृतिक सौन्दर्य को स्वच्छ रखने का प्रयत्न करती है, लेकिन मानव विकास की दौड़ में पर्यावरण एवं प्राकृतिक सौन्दर्य की अनदेखी कर रहा है। पर्यावरण को सुन्दर या स्वच्छ रखना मानव का पहला महत्वपूर्ण कार्य है। आगे हम वृक्ष, लताओं, पुष्पों, और प्रकृति की उपयोगिता को जानेंगे।

वस्तुतः हमारे देश में वृक्षों के देवत्व उनकी पूजा की परम्परा बहुत प्राचीन रही है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ों में जो अवशेष मिले हैं, उनमें भी लता आदि की आकृतियाँ धार्मिक भाव से व्यक्त करती हुई मिलती हैं।[3] सौन्दर्य प्रकृति के अनन्त रुपों में ही नहीं विधाता की समस्त जड़ चेतना सृष्टि के भीतर भी उसी प्रकार ओत–प्रोत है, किन्तु यह प्रत्यक्ष सौन्दर्य के सौन्दर्य संस्कारों का बीज होता है, जिसका आधार कलाकार अपनी कला सृष्टि से करता है और आलोचक कलागत सौन्दर्य के व्यक्त रुप का आस्वादन करता है।[4] आरम्भ से ही मनुष्य का प्रकृति से प्रेम ही नहीं, गहरा सम्बन्ध भी रहा है। प्राचीन वास्तुकला और चित्रकला में वृक्ष प्रेम के अनेक उदाहरण मिलते हैं। इनमें स्थापत्य में अंकित शाल भंजिका मुद्रा विशेष रुप में उल्लेखनीय है। प्रायः अशोक चम्पा, पलाश और शाल वृक्ष के नीचे विशेष मुद्रा में वृक्ष की टहनी पकड़े नारी आकृति का चित्रण मूर्तिकला का प्रिय विषय रहा है।[5]

**सहायक प्राध्यापक (चित्रकला विभाग), बाल गंगा महाविद्यालय, सेन्दुल केमर, टिहरी-गढ़वाल (उत्तराखण्ड)*
***सहायक प्राध्यापक (मानव विज्ञान विभाग), बाल गंगा महाविद्यालय, सेन्दुल केमर, टिहरी-गढ़वाल (उत्तराखण्ड)*

हमारे जीवन में वृक्षों का स्थान सर्वप्रमुख है। पृथ्वी पर प्राकृतिक दृश्यों का व्यापक विस्तार है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के बर्फीले प्राकृतिक दृश्य, पहाड़ी प्राकृतिक दृश्य झीलों के प्राकृतिक दृश्य कृषि योग्य प्राकृतिक दृश्य शामिल हैं।[6] कुछ चित्रकारों ने अपनी अपनी कला शैलियों में प्रकृति की सुरम्य छवि को उतारा है। टिहरी गढ़वाल की चित्र शैली में भी प्राकृतिक सौन्दर्य का सुन्दर वर्णन किया गया है। इस शैली में चित्रकार ने गहरे रंग की सरिता के दोनों किनारों पर मैदानी भाग न दिखाकर ऊँचे–ऊँचे, टेढ़े–मेढ़े गहरे रंग के टीले बनाये हैं, जो वृक्षों से आच्छादित हैं।[7] पहाड़ी शैली में प्राकृतिक दृश्य एवं सौन्दर्य का विशेष रुप से वर्णन किया गया है। बूंदी शैली में भी प्रकृति की सुरम्य वादियों का चित्रण किया गया है, जिसमें वृक्षों को सुन्दर कोमल लाल, पीले, पुष्पों से पुष्पित तथा लतिकाओं से आच्छादित बनाया गया है।[8] मेवाड़ शैली में प्रकृति चित्रण का वृक्ष लताओं, पुष्पों, चट्टान, पर्वतों का आलंकरिक रुप से चित्रण हुआ है। राजस्थानी शैली के साथ–साथ मुगल काल की कला शैली में प्रकृति के सौन्दर्य को बड़े सुरम्य रुप से स्नेहपूर्ण स्थान दिया। कांगड़ा शैली के चित्रकारों ने पहाड़ियों के आकारों का प्रयोग बड़े बुद्विमतापूर्ण ढंग से किया है।[9] जहांगीर काल में प्रकृति प्रेम के उदाहरण मिलते हैं, क्योंकि जहांगीर का प्रकृति प्रेम से गहरा सम्बन्ध था। उन्होंने पर्वत श्रृखंलाओं को स्पष्ट तरीके से धरातल पर उतारा। पर्वत से लेकर पुष्पों एवं पशु–पक्षियों का भावपूर्ण ढंग से अंकन किया है। प्रत्येक मुगल शासक प्रकृति प्रेमी रहे हैं और काफी समय तक प्रकृति के सानिध्य में व्यतीत करते थे। प्राकृतिक वातावरण के प्रति उनकी संवेदनशीलता उन्हें मूक पशु–पक्षियों के समीप ले जाती है, इस सन्दर्भ में स्पष्ट है कि जहांगीर का प्रकृति सम्बन्धी प्रेम छिपा नहीं है।[10] प्रायः यह देखा जाता है कि कलाकार प्रारम्भ से अपने चारों और के परिवेश से प्रेरणा ग्रहण कर उसे वतावरण स्वरुप अपने चित्रों में प्रस्तुत करता है।[11] कला एवं प्रकृति मानव स्वाभाव की सहज क्रिया है। कला एवं कलाकार का प्रकृति से अन्योन्याश्रित सम्बंध रहा है। कला एवं प्रकृति सौन्दर्य के वे आयाम हैं, जो कलाकार की कल्पना से चित्रतल पर स्वरुप प्रदान करते हैं।[12] मनुष्य अपनी शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करके सुखी रह सकता है, किन्तु व इतने से ही संतुष्ट न रहकर अपने हृदय को उल्लासित करने के लिए अथवा आनन्द के लिए सौन्दर्य की खोज करता आ रहा है।[13] भारतीय कलाकार की कल्पना का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, सृष्टि का निरन्तर सृजन करना।

कला में मानवीय सौन्दर्य की भावपूर्ण अभिव्यक्ति एवं उत्सर्जना होती जाती है। प्रत्येक चित्रकार की तूलिका निरन्तर हमेशा बदलना चाहती है कि कुछ नये प्रयोगों को धरातल पर उतारा जाए। कलाकार अपनी तूलिका से सपनों की तरह कला की प्रक्रिया को बदलता है। प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण ऋतुओं एवं बारह मास के बारह ऋतु में भारतीय कलाकारों ने ऋतु परिवर्तन को भावपूर्ण ढंग से चित्रित किया। जहाँ गर्मी की तपती हुई धूप में पशु–पक्षियों का चित्रण किया है, वहीं बसन्त ऋतुओं में हरी–भरी धरती लाल–पीले विभिन्न पुष्पों से धरती की लहलहाती हवाओं के साथ सुन्दरता से प्रकृति के रुप को संवारा है।

प्रकृति एवं कला में परस्पर सम्बंध होता तो है, लेकिन प्रकृति में समयानुसार परिवर्तन होते रहते हैं।[14] इन परिवर्तन के साथ कलाकार भी अपनी तूलिका को निरन्तर अपनी चित्रण शैली से प्रभावित करता रहता है। चित्रकार के मूल आधार ही प्रकृति होता है, जिसको वह प्रकृति का मनमोहक स्वरुप कला सर्जन हेतु प्रेरित करता है।[15] इस भौतिक जगत में नाना प्रकार की विधाएँ होती हैं, जिसे एक चित्रकार अपनी रंग शैली के माध्यम से पूर्ण करती है। प्राचीन काल में मनुष्य ने प्रकृति में अनेक शक्तियों का अनुभव किया और उन्हें व्यक्त करने हेतु वृक्ष लताओं, पशु–पक्षियों की आकृतियों के संयोग से अनेक नवीन अथवा संयुक्त रुपों की सृष्टि की। यह समस्त कार्य कल्पना के द्वारा सम्भव होता है।[16] इसी सौन्दर्य संयोजन का गोचर स्वरुप कलाकृति कहा जाता है और जो आनन्द की अनुभूति कला आकृति से होती है, वह सौन्दर्य बोद्य कहा जाता है।

सन्दर्भ :

(1) www.gramsamachar.com

(2) hindi.indiawaterportal.org

(3) बिष्ट, डॉ.सुजाता : पर्यावरण प्रदूषण और इक्कीसवीं सदी, पृ0सं0 29.

(4) शर्मा, डॉ.संजय : सौन्दर्य का समीक्षात्मक अध्ययन, पृ0सं0 112.

(5) बिष्ट, डॉ.सुजाता : पर्यावरण प्रदूषण और इक्कीसवीं सदी, पृ0सं0 30.

(6) hi.m.wikipedia.org

(7) वर्मा, डॉ.अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृ0सं0 258.

(8) वही, पृ0सं0 189.

(9) अग्रवाल, डॉ.आर.ए. : कला विलास भारतीय चित्रकला का विवेचन, पृ0सं0 167.

(10) प्रदीप, डॉ.किरण : भारतीय कला आकृति, पृ0सं0 118.

(11) वही, पृ0सं0 146.

(12) मावड़ी, डॉ.मोहन सिंह : भारतीय कला सौन्दर्य, पृ0सं0 53.

(13) उपाध्याय, डॉ.रामजी : भारत की प्राचीन संस्कृति, पृ0सं0 9.

(14) मावड़ी, डॉ.मोहन सिंह : भारतीय कला सौन्दर्य, पृ0सं0 55.

(15) वही, पृ0सं0 57.

(16) अग्रवाल, डॉ.जी.के. एवं अवस्थी, डॉ.बिन्दु : दृश्यकला के मूल आधार एवं तकनीक, पृ0सं0 5.